ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र

सितम्बर 2018 (द्वितीय)

माननीय मुख्यमंत्री महोदय श्री मनोहरलाल जी को अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 में मुख्यातिथि के रूप में पधारने हेतु निमंत्रण देते हुए सभा प्रधान मा० रामपाल आर्य, डा० राजेन्द्र विद्यालंकार, श्री राधाकृष्ण आर्य व श्री रमेश आर्य। माननीय मुख्यमंत्री जी ने निमंत्रण स्वीकार किया।

Email : aryapsharyana@yahoo.in | कृण्वन्तो विश्वमार्यम् | Visit us : www.apsharyana.org

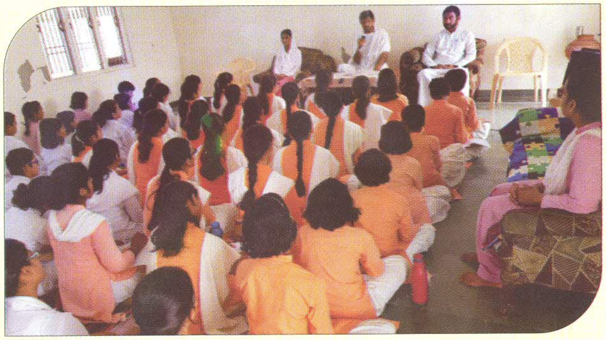

मा० रामपाल आर्य, आचार्य सोमदेव जी, आचार्य सर्वमित्र आर्य व उनकी टीम युवाओं को आर्य समाज व ब्रह्मचर्य के प्रति जागरूक करते हुए।

दान हेतु बैंक खाता

ACCOUNT NAME - ARYA PRATINIDHI SABHA HARYANA
BANK NAME - PNB JHAJJAR ROAD ROHTAK
Account No. - 0406000100426205
IFSC - PUNB0040600
MICR - 124024002

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,119
विक्रम संवत् 2075
दयानन्दाब्द 195

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख-पत्रिका

वर्ष 14 अंक 16

सम्पादक :
उमेद शर्मा

पत्रिका-शुल्क

देश में
वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये

विदेश में
वार्षिक शुल्क 100 डॉलर
आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

सम्पादक-मण्डल

1. आचार्य सोमदेव
2. डॉ० जगदेव विद्यालंकार
3. श्री चन्द्रभान सैनी

सम्पादकीय विभाग

सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष :-
मो० 89013 87993, 7082783793

॥ ओ३म्॥

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

सितम्बर, 2018 (द्वितीय)
16 से 30 सितम्बर, 2018 तक

इस अंक में....

1. संस्कारों का महत्त्व 2
2. सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी 3
3. जाति-व्यवस्था में भारत का भविष्य 5
4. मनुस्मृति—एक विश्लेषण 7
5. संसार में जीने की कला : सामान्य सूत्र 9
6. वेदप्रचार एवं आर्यसमाजों में गुटबाजी क्यों ? 10
7. डर के साये में आध्यापक वर्ग 12
8. समलैंगिकता सम्बन्ध नहीं अपराध है 13
9. आर्यसमाज कहाँ जा रहा है ? 14
10. समाचार-प्रभाग 15

आर्य प्रतिनिधि पाक्षिक पत्रिका के प्रसार में सहयोग दें

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने योग्य पत्रिका है। यदि आप इसके पाठक बनेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे अन्य लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करके ऋषि ऋण से अनृण होवें।

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक का वार्षिक शुल्क 200/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2000/- रुपये है।

आप उपरोक्त राशि 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' दयानन्दमठ रोहतक के नाम से बैंक ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा भिजवाकर सदस्य बन सकते हैं।

—सम्पादक

संस्कारों का महत्त्व

❑ आचार्य सोमदेव, ऋषि उद्यान, अजमेर

संस्कार का जीवन में अत्यधिक महत्त्व है। जो व्यक्ति, समाज, वस्तु जितनी संस्कारित होगी वह उतनी ही उपयोगी होगी। बिना संस्कार के विशेष उपयोगी न होगी। भूमि से निकाले हुए लोहे का संस्कार (शुद्धिकरण) कर देने पर ही वह उपयोग में आ पाता है, बिना संस्कार किये नहीं आ पाता। ऐसे ही जो समाज अपने नियमों अनुशासन आदि से संस्कारित होता है वह अधिक अपना विकास करता है। व्यक्ति के साथ भी ऐसा ही है।

संस्कार शुद्धिकरण, परिशोधन करने को, व्यवस्थित करने आदि को कहते हैं। महर्षि दयानन्द संस्कार करने का परिणाम लिखते हैं—''जिस करके शरीर और आत्मा सुसंस्कृत होने से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्राप्त हो सकते हैं और सन्तान अत्यन्त योग्य होते हैं।'' महर्षि दयानन्द ने मनुष्य के लिए सोलह संस्कार कहे हैं, इनके यथावत् करने से ही मनुष्य उन्नत हो सकता है अन्यथा नहीं।

संस्कार जीवन में आधार (नींव) का काम करते हैं। जिस भवन या वृक्षादि का आधार जितना दृढ़ होता है वह भवन वा वृक्षादि उतना ही लम्बी आयु वाला होता है। इस विषय में पंडित गंगाप्रसाद जी कहते हैं—जितने वृक्ष ऊँचे और विशाल होते हैं, उनकी जड़ें अधिक गहराई तक भूमि के अन्दर प्रवेश करती हैं। कद्दू या लौकी की जड़ बहुत गहरी नहीं होती इसलिए वह रहती भी है एक या दो मास। कोई कद्दू की बेल पचास वर्ष पुरानी न मिलेगी। जैसी जड़ वैसी बेल। परन्तु नीम, पीपल की जड़ बहुत गहरी होती है, इसलिए वृक्ष लम्बे होते हैं और दीर्घ आयु वाले भी। ऐसी जिन मनुष्यों का संस्कार ठीक-ठीक हुआ है वे अधिक सभ्य व दीर्घजीवी होते हैं।

संस्कार करने से मनुष्य के अतिरिक्त पर प्रभाव पड़ता है तो मनुष्य पर क्यों नहीं। किसान फसल बोने से पहले खेत का संस्कार करता है अर्थात् भूमि को उर्वरा बनाता है, उसको जोतकर उसमें खाद आदि देकर। संस्कृत हुई भूमि में फसल उत्तम होती है। भूमि के साथ-साथ बीज का संस्कार होता है। उत्तम बीज उत्तम भूमि में बोया हुआ फसल अच्छी देता है।

पशुओं, पक्षियों को संस्कारवान् बनाया जा सकता है तो मनुष्यों को क्यों नहीं। विडम्बना इस बात की है कि मनुष्य इतना बुद्धिमान् होते हुए भी अपने आपको सर्वश्रेष्ठ सिद्ध नहीं कर पाया। इस विषय में उपाध्याय जी लिखते हैं—''जो कृषक अपने बैलों की वंशपरम्परा का ध्यान रखता है वह अपनी सन्तान के विषय में उतना सावधान नहीं रहता। जो राजा देश के पशु-पक्षी और सारे राष्ट्र का ध्यान रखता है, वह कभी यह सोचने का कष्ट भी नहीं करता कि राज-परिवार के राजकुमारों को किस प्रकार जन्म दिया जाये या किस प्रकार पालन हो। एक कृषक यह नहीं सोचता कि किस प्रकार सुन्दर कृषक उत्पन्न किये जावें। एक पण्डित यह कभी स्वप्न में भी नहीं विचारता कि उसकी सन्तान किस प्रकार उसके समान योग्य और प्रतिभाशाली बन सकेगी। यह सब इस कारण से है कि हमने संस्कारों के महत्त्व को उचित रूप में नहीं समझा है। इसलिए हमारे ऋषियों ने यह उपदेश दिया कि सन्तानोत्पत्ति के पूर्व इस प्रकार के नियमों का पालन किया जाये कि अयोग्य सन्तान किसी भी प्रकार उत्पन्न ही न हो सके।'' जब तक मनुष्य अपने को उन्नत करने के लिए संस्कार युक्त न होगा तब तक उन्नत भी न होगा।

महर्षि ने सोलह संस्कारों का वर्णन शरीर और आत्मा सुसंस्कृत करने के लिए किया है। तीन संस्कार जन्म से पूर्व होते हैं, बारह संस्कार जीवन की अलग-अलग अवस्थाओं में और एक संस्कार मरण पश्चात्। गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, ये जन्म से पूर्व के संस्कार हैं। जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, कर्णवेध, चूडाकर्म, उपनयन, वेदारम्भ, समावर्त्तन, विवाह, वानप्रस्थ, संन्यास ये जीवन की विभिन्न अवस्थाओं में किये जाने वाले संस्कार और अन्त्येष्टिकर्म संस्कार मृत्यु के बाद का संस्कार है।

मनुष्य श्रेष्ठ मनुष्य उत्पन्न हो, इसलिए विवाह तथा गर्भाधान संस्कार ऋषियों ने रखे। गर्भाधान से पूर्व स्त्री-पुरुष का शरीर व मन स्वस्थ हो कि जिससे आने वाली संतान शरीर व मन से स्वस्थ रहे। यदि गर्भाधान से पूर्व मन

क्रमशः पृष्ठ 6 पर......

सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी

एकादश समुल्लास के प्रश्नोत्तर

❑ कन्हैयालाल आर्य, उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

गतांक से आगे....

प्रश्न 795. शाक्त आदि ने मूर्तियों में जैनियों का अनुकरण नहीं किया क्योंकि जैनियों की मूर्तियों के सदृश शाक्त, शैवादि की मूर्तियाँ नहीं हैं। ऐसा क्यों?

उत्तर-हाँ, यह ठीक है। जो जैनियों के तुल्य बनाते तो

जैनमत में मिल जाते। इसलिए जैनों की मूर्ति से विरुद्ध बनाई, क्योंकि जैनों और इनका एक-दूसरे से विरोध करना मुख्य काम था। जैसे जैनों ने मूर्तियां नंगी, ध्यानावस्थित और विरक्त मनुष्य के समान बनाई हैं, उनसे विरुद्ध वैष्णवादि ने यथेष्ट शृंगारित स्त्री के सहित रंगराग, भोग, विषयासक्ति सहिताकार खड़ी और बैठी हुई बनाई हैं। जैनी लोग बहुत से शंख, घण्टा, घरियार आदि बाजे नहीं बजाते, ये लोग बड़ा कोलाहल करते हैं। तब तो ऐसी लीला के रचने से वैष्णवादि सम्प्रदायी पोपों के चेले जैनियों की जाल से बच के इनकी लीला में आ फंसे और बहुत व्यासादि महर्षियों के नाम से मनमाने असंभव गाथायुक्त ग्रन्थ बनाये। उनका नाम 'पुराण' रखकर कथा भी सुनाने लगे। और फिर ऐसी-ऐसी विचित्र माया रचने लगे कि पाषाण की मूर्तियां बनाकर गुप्त कहीं पहाड़ वा जंगलादि में धर आये व भूमि में गाड़ दीं। पश्चात् अपने चेलों में प्रसिद्ध किया कि मुझको रात्रि को स्वप्न में महादेव, पार्वती, राधा, कृष्ण, सीता, राम वा लक्ष्मी, नारायण और भैरव, हनुमान् आदि ने कहा कि हम अमुक-अमुक ठिकाने हैं। हमको वहां से ला, मन्दिर में स्थापन कर और तू ही हमारा पुजारी होवे तो हम मनवांछित फल देवें। जब आंख के अन्धे और गांठ के पूरे लोगों ने पोपजी की लीला सुनी, तब तो सच ही मान ली। और उनसे पूछा कि ऐसी वह मूर्ति कहां पर है? तब तो पोपजी बोले कि अमुक पहाड़ वा जंगल में है, चलो मेरे साथ दिखला दूं। तब तो वे अन्धे उस धूर्त के साथ चले और वहां पहुंचकर देखा। आश्चर्य होकर उस पोप के पग में गिरकर कहा कि 'आपके ऊपर इस देवता की बड़ी कृपा है। अब आप ले चलिए और हम मन्दिर बनवा देवेंगे। उसमें इस देवता की स्थापना कर आप ही पूजा करना। और हम लोग भी इस प्रतापी देवता के दर्शन करके मनोवांछित फल पावेंगे।' इसी प्रकार जब एक ने लीला रची तब तो उसको देख सब पोप लोगों ने अपनी जीविकार्थ छल-कपट से मूर्तियां स्थापन कीं।

प्रश्न 796. परमेश्वर निराकार है, वह ध्यान में नहीं आ सकता, इसलिए मूर्ति अवश्य होनी चाहिए। कोई कुछ भी नहीं करे और मूर्ति के सम्मुख जा, हाथ जोड़ परमेश्वर का स्मरण कर ले और नाम ले ले तो इसमें क्या हानि है?

उत्तर-जब परमेश्वर निराकार, सर्वव्यापक है तो उसकी मूर्ति ही नहीं बन सकती और जो मूर्ति के दर्शन मात्र से परमेश्वर का स्मरण होवे तो परमेश्वर के बनाए पृथिवी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पति आदि अनेक पदार्थ, जिनमें ईश्वर ने अद्‌भुत रचना की है, क्या ऐसी रचनायुक्त पृथिवी, पहाड़ आदि परमेश्वर रचित महामूर्तियाँ कि जिन पहाड़ आदि में से मनुष्यकृत मूर्तियां बनती हैं, उनको देखकर परमेश्वर का स्मरण नहीं हो सकता? जो तुम कहते हो कि मूर्ति के देखने से परमेश्वर का स्मरण होता है, यह तुम्हारा कथन सर्वथा मिथ्या है। और जब वह मूर्ति सामने न होगी तो परमेश्वर के स्मरण न होने से मनुष्य एकान्त पाकर चोरी-जारी आदि कुकर्म करने में प्रवृत्त हो सकता है। क्योंकि वह जानता है कि इस समय यहां मुझे कोई नहीं देखता, इसलिए वह अनर्थ करे बिना नहीं चूकता, इत्यादि अनेक दोष पाषाणादि मूर्तिपूजा करने से सिद्ध होते हैं।

प्रश्न 797. जो पाषाणादि मूर्तियों को न मानकर परमेश्वर को सर्वदा सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, न्यायकारी मानता है उस पुरुष का क्या होता है?

उत्तर-वह पुरुष सर्वत्र सर्वदा परमेश्वर को सबके बुरे-भले कर्मों का द्रष्टा जानकर एक क्षणमात्र भी परमात्मा से अपने को पृथक् न जान के, कुकर्म करना तो कहां रहा, किन्तु मन में कुचेष्टा भी नहीं कर सकता। क्योंकि वह जानता है—जो मैं मन, वचन और कर्म में भी कुछ बुरा काम करूंगा तो इस अन्तर्यामी के न्याय से बिना दण्ड पाये कदापि न बचूंगा। और नाम स्मरण मात्र से कुछ भी फल नहीं होता। जैसा कि मिश्री-मिश्री कहने से मुँह मीठा और

नीम-नीम कहने से कड़वा नहीं होता, किन्तु जीभ से चखने ही से मीठा वा कड़वापन जाना जाता है।

प्रश्न 798. क्या नाम लेना सर्वथा मिथ्या है, जो सर्वत्र पुराणों में नाम-स्मरण का बड़ा माहात्म्य लिखा है?

उत्तर-'नाम-स्मरण' की रीति जो पुराणों में है वह झूठी है। उत्तम वेदोक्त रीति इस प्रकार है—जैसे ईश्वर का 'न्यायकारी' नाम है। इस नाम से जो इसका अर्थ है कि जैसे पक्षपातरहित होकर परमात्मा सब का यथावत् न्याय करता है, वैसे उसको ग्रहण कर न्याययुक्त व्यवहार सर्वदा करना, अन्याय कभी न करना। इस प्रकार एक नाम से भी मनुष्य का कल्याण हो सकता है।

प्रश्न 799. हम भी जानते हैं कि परमेश्वर निराकार है, परन्तु उसने शिव, विष्णु, गणेश, सूर्य और देवी आदि के शरीर धारण करके राम, कृष्णादि अवतार लिये। उसकी मूर्ति बनती है, क्या यह बात झूठी है?

उत्तर-हां-हां झूठी है। क्यों **'अज एकपात्'**, **'अकायम्'** इत्यादि विशेषणों से परमेश्वर को जन्म-मरण और शरीरधारण रहित वेदों में कहा है तथा युक्ति से भी परमेश्वर का अवतार कभी नहीं हो सकता। क्योंकि जो आकाशवत् सर्वत्र व्यापक, अनन्त और सुख-दुःख, दृश्यादि गुणरहित है, वह एक छोटे से वीर्य, गर्भाशय और शरीर में क्योंकर आ सकता है? आता-जाता वह है कि जो एकदेशीय हो। और जो अचल, अदृश्य, जिसके बिना एक परमाणु भी खाली नहीं है, उसका अवतार कहना जानो वंन्ध्या के पुत्र का विवाह कर उसके पौत्र के दर्शन करने की बात कहना है।

प्रश्न 800. जब परमेश्वर व्यापक है तो मूर्ति में भी है। पुनः चाहे किसी पदार्थ में भावना करके पूजा करना अच्छा क्यों नहीं? जहाँ भाव करे वहाँ ही परमेश्वर सिद्ध होता है?

उत्तर-जब परमेश्वर सर्वत्र व्यापक है तो किसी एक वस्तु में परमेश्वर की भावना करना, अन्यत्र न करना, यह ऐसी बात है कि जैसी चक्रवर्ती राजा को सब राज्य की सत्ता से छुड़ा के एक छोटी-सी झोंपड़ी का स्वामी मानना। देखो! यह कितना बड़ा अपमान है। वैसा तुम परमेश्वर का भी अपमान करते हो। जब व्यापक मानते हो तो वाटिका में से पुष्प-पत्र तोड़ के क्यों चढ़ाते। चन्दन घिस के क्यों लगाते? धूप को जला के धूनी क्यों देते हो? घंटा, घड़ियाल, झाँज, पखावड़ों को लकड़ी से कूटना-पीटना क्यों करते हो? तुम्हारे हाथों में है, क्यों जोड़ते? शिर में है, क्यों शिर नमाते? अन्न-जलादि में है, क्यों नैवेद्य धारते? जल में है, स्नान क्यों कराते? क्योंकि उन सब पदार्थों में परमात्मा व्यापक है। और तुम व्यापक की पूजा करते हो या व्याप्य की? जो व्यापक की करते हो तो पाषाण, लकड़ी आदि पर चन्दन पुष्पादि क्यों चढ़ाते हो? और जो व्याप्य की करते हो तो हम परमेश्वर की पूजा करते हैं, ऐसा झूठ क्यों बोलते हो? हम पाषाणादि के पुजारी हैं, ऐसा सत्य क्यों नहीं बोलते?

अब कहिए 'भाव' सच्चा है वा झूठा? जो कहो सच्चा है तो तुम्हारे भाव के अधीन होकर परमेश्वर बद्ध हो जाएगा और तुम मृत्तिका में सुवर्ण-रजतादि, पाषाण में हीरा-पन्ना आदि, समुद्रफेन में मोती, जल में घृत-दुग्ध-दधि आदि और धूलि में मैदा-शक्कर आदि की भावना करके उसको वैसे क्यों नहीं बनाते हो? तुम लोग दुःख की भावना कभी नहीं करते, वह क्यों होता है? और सुख की भावना सदैव करते हो, वह क्यों नहीं प्राप्त होता? अन्धा पुरुष नेत्र की भावना करके क्यों नहीं देखता? मरने की भावना नहीं करते, क्यों मर जाते हो? इसलिए तुम्हारी भावना सच्ची नहीं। क्योंकि जैसे में वैसा करने का नाम 'भावना' कहते हैं। जैसे अग्नि में अग्नि, जल में जल जानना और जल में अग्नि, अग्नि में जल समझना अभावना है। क्योंकि जैसे को वैसा जानना ज्ञान और अन्यथा जानना अज्ञान है। इसलिए तुम अभावना को भावना और भावना को अभावना कहते हो।

प्रश्न 801. जब तक वेदमन्त्रों से आह्वान नहीं करते तब तक देवता नहीं आता और आह्वान करने से झट आता और विसर्जन करने से चला जाता है?

उत्तर-जो मन्त्र को पढ़कर आह्वान करने से देवता आ जाता है, तो मूर्ति चेतन क्यों नहीं हो जाती? और विसर्जन करने से चला जाता है तो वह कहाँ से आता और कहाँ जाता है? सुनो अन्धो! पूर्ण परमात्मा न आता और न जाता है। जो तुम मन्त्रबल से परमेश्वर को बुला लेते हो तो उन्हीं मन्त्रों से अपने मरे हुए पुत्र के शरीर में जीव को क्यों नहीं बुला लेते और शत्रु के शरीर से जीवात्मा का विसर्जन करके क्यों नहीं मार सकते? सुनो भाई, भोले-भाले लोगो! ये पोपजी तुमको ठग कर अपना प्रयोजन सिद्ध करते हैं। वेदों में पाषाणादि मूर्तिपूजा और परमेश्वर के आह्वान-विसर्जन करने का एक अक्षर भी नहीं है। **क्रमशः अगले अंक में...**

जाति-व्यवस्था में भारत का भविष्य

❑ सत्यप्रकाश आर्य, उपमंत्री, वेदप्रचार मण्डल, रेवाड़ी, मो० 9416231627

न्यायशास्त्र में गौतम मुनि कहते हैं (समानप्रसवात्मिका जाति) अर्थात् जिसका समान प्रसव हो वह एक जाति है। समान प्रसव वह कहलाता है जिनके परस्पर संयोग से वंश चलता है। जैसे स्त्री-पुरुष के संयोग से जो जन्म लेता है वह मनुष्य जाति है। यह एक जाति है। परमात्मा ने मनुष्य की केवल एक जाति बताई है। स्त्री और पुरुष उसके दो अंग हैं। अपवाद स्वरूप किन्नर भी जन्म ले सकता है। परन्तु यह सब एक मनुष्य योनि है। गाय और सांड के संसर्ग से जो जीव जन्म लेता है वह गोवंश कहलाता है। विजातीय जातियों के संसर्ग से कुछ पैदा नहीं हो सकता यह ईश्वरीय विधान है। ईश्वरकृत केवल एक ही मानव जाति है। मनुष्य ने अपने स्वार्थ या वर्चस्व स्थापित करने के लिए हजारों जातियों का वर्गीकरण कर दिया। यह प्रकृति के सिद्धांत के विरुद्ध है। अप्राकृतिक विभाजन से मानव समाज खण्ड-खण्ड होकर खण्डित होता जा रहा है। जातीय आधार पर वैमनस्य और भेदभाव की विषवेल भयंकर रूप धारण कर चुकी है। यह वैदिक सिद्धांतों के सर्वथा प्रतिकूल है।

मनु महाराज ने वर्णव्यवस्था का विधान गुण-कर्म और स्वभाव के अनुसार प्रस्तावित किया था। उस समय इस व्यवस्था को सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया। वरण का अर्थ है ग्रहण करना-चुनना। व्यक्ति जिस योग्य होगा उसी वर्ण में उसकी पद-स्थापना होती थी। जन्मना आधार पर वर्णव्यवस्था में कोई स्थान नहीं था। ब्राह्मण वर्ण के माता-पिता की सन्तान अपनी योग्यता अनुसार किसी भी वर्ण में जा सकती थी। शूद्र वर्ण के माता-पिता की सन्तान को भी वही अधिकार प्राप्त था कि वह अपनी योग्यता से अन्य वर्ण में पद-स्थापित हो सकता था। जब वर्णव्यवस्था सिद्धान्त में जड़ता आ गई उस समय ब्राह्मण माता-पिता की सन्तान ब्राह्मण और शूद्र माता-पिता की शूद्र कहलाने लगी। इस कालखण्ड से ही जन्मना जाति व्यवस्था का प्रचलन हो गया और समाज का विखण्डन होने लग गया।

सत्य सनातन धर्म को मानने वाले सभी विद्वान् यह मानते हैं कि ब्रह्मा जी से मैथुनी सृष्टि आरम्भ हुई। ब्रह्मा जी के क्या मानस पुत्र उत्पन्न हुए वह सब ब्राह्मण थे फिर उनकी सभी सन्तानें भी ब्राह्मण होनी चाहिए थी। यह अनसुलझा प्रश्न है कि इतनी जातियां इस भारत भूमि पर कैसे पैदा हो गई ?

महर्षि दयानन्द ने मनु महाराज द्वारा प्रतिपादित वर्णव्यवस्था को स्वीकार्य बताया और जन्मना जाति व्यवस्था का विरोध किया। देवदयानन्द ने 'शिल्पविद्या' को महागम्भीर विद्या बताया और कहा कि इसको कोई महापण्डित ही अपने चतुर सुजान हाथों से कर सकता है। यह जानकर अति दुःख होता है कि पौराणिक विचारधारा से प्रभावित लोग शिल्पविद्या को निम्न कर्म बताते हैं और शिल्पकार को शूद्र वर्ण बताते हैं। हमारे देश के पिछड़ेपन का एक मूल कारण यह संकीर्ण सोच है। पाश्चात्य जगत् में शिल्पकार को आविष्कारक की संज्ञा प्रदान कर उसे आदर की दृष्टि से देखा जाता है, इसलिए वह देश औद्योगिक क्रान्ति के जनक हैं। विश्व का वैभव उनकी अमानत बन चुकी है।

समय की ज्वलन्त समस्या जातिवाद है। लोकतान्त्रिक व्यवस्था में इसे निरन्तर हवा मिल रही है। जातीय संगठनों ने राजनीतिक दल बनाकर कई प्रान्तों में अपने स्थायी राज्य व्यवस्था स्थापित कर रखी है। राष्ट्रीय राजनैतिक दल इनके आगे गौण होते जा रहे हैं। जातिगत व्यवस्था के कारण आरक्षण का दावानल सुलग रहा है। देश के किसी न किसी प्रान्त में आरक्षण के पक्ष और विपक्ष में आगजनी-लूट-पाट, रेल रोको, पेड़ काटो, नहरें तोड़ो आदि उत्पात होते रहते हैं। सर्व-समाज में कटुता के बीज अंकुरित हो जाते हैं। सामाजिक समरसता, सहजता व सहनशीलता समाप्त हो जाती है। अराजकता की स्थिति से निपटने में राज्य सरकारें विफल हो जाती हैं। वोट बैंक की राजनीति से राष्ट्र का अहित हो रहा है। वर्णव्यवस्था के सिद्धान्त को अपना कर ही इस आरक्षण रूपी विषधर पर काबू पाया जा सकता है। योग्य व्यक्ति को ही ईमानदारी से उसका अधिकार प्रदान करने की व्यवस्था सुनिश्चित होनी चाहिए।

देश में केवल एक ही संस्था आर्यसमाज है, जो व्यक्ति के गुणों के आधार पर उसकी वर्ण निर्धारित करती है। आर्यसमाज की भट्ठी में तपकर व्यक्ति जाति-पाति व दलगत राजनीति से ऊपर उठकर समाज व देश का कल्याण कर सकता है। दलित कहे जाने परिवार में जन्म लेकर व आर्यसमाज की भट्ठी में तपकर आचार्य सुदर्शनदेव पण्डित के पद नाम से विभूषित हुए। इसी प्रकार यादव कुल में जन्म लेकर व

आर्यसमाज की भट्टी में तपकर सोहनलाल आर्य पण्डित के नाम से विख्यात हुए। इतिहास में इस प्रकार के सैकड़ों उदाहरण हैं।

अवर्ण-सवर्ण का विवाद तो यहां पहले से ही विद्यमान था। इन वर्णों में छुआछात भयंकर रूप से विद्यमान थी। अंग्रेजी शासन व्यवस्था ने 'फूट डालो, राज करो' की नीति के अन्तर्गत जातीय उन्माद को बढ़ावा दिया। लगभग सभी जागरूक जातियों के संगठनों को पंजीकृत कर आपसी विवादों को और बढ़ावा दिया। आपसी जातीय विवादों के मामले न्यायालयों तक पहुंचे और वहां भी निर्णय उसी प्रकार हुए जैसे बिल्लियों की लड़ाई में बन्दर के हाथ में न्याय की तराजू। इसी विघटनकारी नीति के अनुरूप सन् 1879 ई० में भूमि प्रबन्धन किया गया जिसमें काश्तकार-गैरकाश्तकार और मरूस के रूप में समाज को विभाजित कर दिया। सेना में भर्ती के नाम पर मार्शल और नॉन मार्शल के बीज बो दिए। उनकी टीस अब तक महसूस हो रही है।

इतिहास साक्षी है कि जातिगत बंटवारे से देश को लाभ बहुत कम और हानि अधिक हुई है। देश की मिट्टी के गर्व वीर हेमू ने पानीपत की दूसरी लड़ाई में विजय प्राप्त की। अकबर का सेनापति बैरम खां ने मैदान छोड़ दिया। विजय उन्मत्त वीर विक्रमादित्य विजय पताका लेकर आगे बढ़ता गया। उस समय अफ़गान सैनिक हतप्रभ रह गए कि राज्य हिन्दू को चला गया और क्षत्रीय हेमू की पीठ पर इसलिए नहीं आए कि राज्य धूसर बनिये के पास चला गया। हेमू को अकेला आगे बढ़ते देख मुगलों ने दोबारा हमला कर दिया। वीर हेमू की आंख में तीर लगा और घायल होकर समर भूमि पर गिर पड़ा। अलीकूली खां ने वीर हेमू को पकड़ लिया और बैरम खां ने साहसी वीर हेमू का कत्ल कर दिया। हम जीतकर हार गए।

वीर शिवाजी ने औरंगजेब जैसे निष्ठुर बादशाह को हराकर हिन्दू राज्य की स्थापना की परन्तु वर्ग विशेष ने वीरवर शिवाजी की ताजपोशी नहीं की क्योंकि हिन्दू धर्म में शूद्र का राज्याभिषेक नहीं किया जा सकता। अतुल्य धनराशि खर्च करवाकर उन्हें 70 पीढ़ी पहले का क्षत्रिय वंश बताकर महाराजाधिराज की उपाधि से नहीं छत्रपति की उपाधि प्रदान कर राज्याभिषेक किया। इसी प्रकार के उदाहरणों से इतिहास सराबोर है। हमें पिछली भूलों से शिक्षा ग्रहण कर भारत के भविष्य को सुनहरा बनाना है तो जातीय व्यवस्था पर पुनः विचार करना होगा।

संस्कारों का महत्त्व....... पृष्ठ 2 का शेष.......

बुद्धि आदि स्वस्थ नहीं है तो बच्चा भी वैसी मन बुद्धि वाला होगा। इस विषय में इंग्लैण्ड वालों ने यह पता लगाया कि जो बच्चे मार्च या अप्रैल में जन्म लेते हैं, उनके मस्तिष्क में कुछ न कुछ खराबी पाई जाती है। इसका कारण यह बताया जाता है कि मार्च और अप्रैल में जन्म लेने वाले बालकों का गर्भाधान जुलाई या अगस्त में हुआ होगा। उस समय इंग्लैण्ड में अंगूर की फसल होती है और लोगों को अधिक मात्रा में शराब पीने को मिलती है। पुरुष और स्त्री नशे में मस्त होते हैं और इसी मदहोशी में गर्भाधान होता है। इनके नशे का प्रभाव सन्तान के मस्तिष्क पर होता है। जिस रज-वीर्य से शरीर बनता है, उसमें शराब के दुर्गुण सम्मिलित होते हैं और वही प्रभाव उनके मस्तिष्क पर जन्म के समय होता है और भावी जीवन को प्रभावित करता रहता है। यदि गर्भाधान के समय सावधानी न रखी गई तो भिन्न-भिन्न प्रकार के रोगों का आक्रमण हो जाता है, जिसका दुष्परिणाम संतान को जीवन भर उठाना पड़ता है।

बालक का बालकपन सुख से व्यतीत हो और भावी शारीरिक तथा मानसिक उन्नति के बीज उसमें अंकित किये जावें, इसलिए पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म तथा कर्णवेध संस्कार ऋषियों ने रखे। मनुष्य का बच्चा विद्यानुरागी इसके लिए यज्ञोपवीत संस्कार रखा। बालक ब्रह्मचर्यव्रत धारण करके बलवान् विद्वान् और मनुष्य जाति का प्रेमी हो सके इसके लिए वेदारम्भ संस्कार था। गृहस्थ में प्रवेश करने से पहले समावर्तन संस्कार किया जाता था। गृहस्थों की जब वृद्धावस्था आरम्भ हो तब उसको जितेन्द्रिय, तपस्वी, जिज्ञासु और प्रेम द्वारा मनुष्य जाति की सेवा करने के योग्य बनाने के लिए वानप्रस्थ था व लोकोपकार व मुक्ति के लिए संन्यास संस्कार व मृत्यु होने के बाद इस शरीर का दाह कर देना (वेदानुकूल दाह) अन्त्येष्टि संस्कार होता था।

संस्कार रस्म-रिवाज न होकर मानसिक अर्थात् अन्तःकरण की शुद्धि तथा शारीरिक शुद्धि के लिए जो क्रियायें यथावत् की जावें उनको ऋषियों ने संस्कार कहा है। इन्हीं संस्कारों से मनुष्यों का कल्याण संभव है अन्यथा नहीं। इस लेख में संस्कार-चन्द्रिका व पं० गंगाप्रसाद जी के लेख का सहयोग लिया गया है।

मनुस्मृति—एक विश्लेषण

❑ जगमालसिंह, प्रवक्ता-संस्कृत, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, खेड़ी महम (रोहतक)

आज पूरे देश में मनुस्मृति पर एक बहस छिड़ी हुई है। बहस तक तो बात ठीक थी परन्तु अब तो यह मनुस्मृति बनाम संविधान दो विचारधाराओं में विभक्त होकर परस्पर

टकराव की स्थिति उत्पन्न हो रही है, जो देश के लिए ठीक नहीं है। इनमें एक पक्ष जहाँ मनुस्मृति को जला रहा है और भरपेट उसकी निन्दा कर रहा है तो वहीं दूसरा पक्ष देश के संविधान को जलाकर मनुस्मृति समर्थक एवं देश बचाने के उद्घोष लगा रहा है। लेकिन सच्चाई यह है कि दोनों ही पक्षों के निन्यानवे प्रतिशत लोग न तो मनुस्मृति के विषय में जानते हैं और न ही भारत के संविधान से वाकिफ हैं। अपितु इनको कुछेक स्वार्थी (राजनेता व विद्वान्) लोगों ने आपस के विरोध जाल में फंसा रखा है। जैसा कि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थप्रकाश की भूमिका में लिखा है—'विद्वानों के विरोध से अविद्वानों में विरोध बढ़कर अनेकविध दुःख की वृद्धि और सुख की हानि होती है। इस हानि ने, जो कि स्वार्थी मनुष्यों को प्रिय है, सब मनुष्यों को दुःखसागर में डुबा दिया है।' देश की वर्तमान परिस्थिति का यही कारण है। इस भयावह स्थिति से निकलने या उबरने का उपाय भी स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थप्रकाश की भूमिका में ही लिखा हुआ है—'विद्वान् आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश वा लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर देना, पश्चात् मनुष्य लोग स्वयं अपना हिताहित समझकर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें।'

इसलिए स्वामी दयानन्द सरस्वती की उल्लिखित पंक्तियों को आधार मानकर प्रस्तुत लेख में मनुस्मृति से सम्बन्धित कुछ बातों पर विचार करते हैं, ताकि नीरक्षीरविवेकी जन मनुस्मृति का सच जान सकें।

मनुस्मृति क्या है ? मनुस्मृति एक विधि-विधानात्मक शास्त्र है। इसमें जहाँ एक ओर वर्णाश्रम धर्मों के रूप में व्यक्ति एवं समाज के लिए हितकारी धर्मों, नैतिक कर्त्तव्यों, मर्यादाओं, आचरणों का वर्णन है वहां श्रेष्ठ समाज व्यवस्था के लिए विधानों=कानूनों का निर्धारण भी है और साथ ही मुक्ति प्राप्त कराने वाले आध्यात्मिक उपदेशों का निरूपण है। इस प्रकार यह व्यक्ति एवं समाज के लिए धर्मशास्त्र एवं आचारशास्त्र है तो साथ ही सामाजिक व्यवस्थाओं को सुचारु रूप में रखने के लिए 'संविधान' भी है। इसलिए मनुस्मृति सर्वाधिक मान्यता प्राप्त एवं लोकप्रिय ग्रन्थ था परन्तु जैसे-तैसे परम्पराएं शिथिल या विकृत होती गई, लोगों ने अपने आचरण या परम्पराओं को शास्त्रसम्मत सिद्ध करने के लिए इसमें तदनुरूप विचारों के प्रक्षेप कर दिए। इसलिए मनुस्मृति का वर्तमान रूप विकृत एवं दूषित हो गया है।

मनुस्मृति का मूल प्रोक्ता-इस समय मनुस्मृति के प्रोक्ता या रचयिता के सम्बन्ध में निम्न चार मत प्रचलित हैं—

1. स्वायम्भुव मनु-मनुस्मृति के भूमिका रूप प्रथम अध्याय के पहले चार (प्रचलित में छः) श्लोकों का भावार्थ—'महर्षि लोगों ने एकाग्रचित्त बैठे हुए मनु के पास जाकर कहा कि आप वेदों के विद्वान् हैं, इसलिए तदनुसार आप हमें वर्णाश्रम धर्मों के विषय में बताइये।' इत्यादि वचनों के कारण अधिकतर विद्वान् स्वायम्भुव मनु को ही मनुस्मृति का मूल प्रवक्ता मानते हैं।

2. ब्रह्मा—मनुस्मृति में एक स्थान पर उल्लेख है—'ब्रह्मा ने मनुस्मृति शास्त्र को रचकर सबसे पहले मुझ मनु को विधिपूर्वक पढ़ाया और फिर मैंने मरीचि आदि मुनियों को ग्रहण कराया।' मनु० 1/58

3. वैवस्वत मनु-कुछ आलोचक मनुस्मृति को वैवस्वत मनु प्रोक्त मानते हैं। इनका आधार यह है कि मनु० 1/61/62 श्लोकों में स्वायम्भुव मनु के वंश का वर्णन करते हुए सातवें वैवस्वत मनु तक का उल्लेख है। पहले मनु के काल में सातवें मनु तक का वर्णन नहीं हो सकता अतः यह सातवें वैवस्वत मनु की रचना हो सकती है।

4. भृगु-मनुस्मृति को भृगु प्रोक्त मानने वालों के लिए आधारभूत सामग्री मनुस्मृति में ही प्राप्त है। परवर्ती ग्रन्थों में भी उसी को आधार बनाकर यह मान्यता प्रदर्शित की गई है। मनु० 1/59-60

मनुस्मृति का काल-अन्य प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों की तरह मनुस्मृति विषयक काल का भी कहीं उल्लेख न होने के कारण सुनिश्चित रूप से मनुस्मृति का काल निर्धारण करना कठिन है। लेकिन फिर भी विद्वानों द्वारा प्राचीन ग्रन्थों में पाए

जाने वाले उद्धरणों को आधार मानकर मनुस्मृति के काल का अनुमान लगाने का प्रयास किया है।

भारतीय वंशावलियों के अनुसार ब्रह्मा को सृष्टि का आदि वंश प्रवर्तक माना जाता है और मनु उससे दूसरी पीढ़ी में परिगणित है। अब सृष्टिसंवत् अनुसार एक अरब छियानवे करोड़ आठ लाख तिरेपन हजार एक सौ उन्नीसवां वर्ष चल रहा है (मनु० 1/64-73, 79-80), इसलिए मनुस्मृति भी इतनी ही पुरानी है। स्वामी दयानन्द सरस्वती एवं वैदिक परम्परा के विद्वान् इसी कालगणना को सर्वाधिक विश्वसनीय मानते हैं, परन्तु पाश्चात्य एवं आधुनिक विद्वान् इस कालगणना पर विश्वास नहीं करते। श्री के.एल. दफ्तरी स्वायंभुव मनु का काल 2670 ई०पू० मानते हैं। श्री त्र्यं०गु० काले ने पुराणों के अनुसार मनु का काल 3102 ई०पू० निर्धारित किया है। लोकमान्य तिलक ने ज्योतिष के आधार पर मनु का काल 2500 ई०पू० से 4500 ई०पू० के लगभग माना है। डॉ० पी.वी. काणे ने मनु का काल ई०पू० 4000-1000 से पूर्व माना है। इस प्रकार मनुस्मृति के काल विषयक अन्य भी मत हैं। इनमें परस्पर आकाश-पाताल का अन्तर होने के कारण किसी मत को सर्वमान्य नहीं कहा जा सकता।

अध्याय विभाजन-मनु की शैली में अध्याय विभाजन अभीष्ट ही नहीं है। क्योंकि इसमें पूर्वापर विषय का साथ-साथ संकेत होता रहता है। यदि हम अध्याय विभाजन करते हैं तो श्लोक को तोड़ना पड़ेगा और दूसरे विषय की संकेतित पंक्ति पहले अध्याय में रखनी पड़ेगी, जो मनु की मौलिकता के विपरीत है। वर्तमान अध्याय विभाजन में तो बहुत ज्यादा घालमेल है। जैसे प्रथम अध्याय का विभाजन मनु० 2/25 के बाद होना चाहिए था जिससे प्रथम अध्याय का विषय पूर्ण होता। इसी प्रकार अष्टम अध्याय में राजधर्म के अन्तर्गत 18 प्रकार के व्यवहारों का निर्णय जो मनु० 8/1 से शुरू होकर 9/250 पर समाप्त होता है। बीच में अध्याय विभाजन करके विषय खण्डित किया है जो गलत है। अतः मनुस्मृति का अध्यायों में विभाजन भी मौलिक नहीं है।

प्रक्षेपानुसन्धान-मनुस्मृति में पक्षेपानुसन्धान की भी लम्बी फेहरिस्त है। सबसे पहले कुल्लूक भट्ट (1150-1300 ई०) ने 170 श्लोकों को प्रक्षिप्त माना। उसके बाद स्वामी तुलसीदास, स्वामी श्रद्धानन्द व गंगाप्रसाद उपाध्याय आदि विद्वानों ने प्रक्षेप निकालने का कार्य किया। इनके अतिरिक्त वूलर और डॉ० जे० जौली आदि पाश्चात्य विद्वानों ने भी प्रक्षेपों को दूर करने का प्रयास किया किन्तु समस्या सुलझ नहीं पाई।

इस समस्या को सुलझाने के लिए वैदिक विद्वान् डॉ० सुरेन्द्र कुमार (अनुसंधानकर्त्ता एवं समीक्षक) ने अत्यन्त श्लाघनीय कार्य किया। डॉ० सुरेन्द्र कुमार के अनुसार—'प्रक्षेपों को निकालने में किसी पूर्वाग्रह या पक्षपात की भावना का आश्रय न लेकर तटस्थता को अपनाया है और ऐसे आधारों या मानदण्डों को आधार बनाया है जो सर्वमान्य है। वे हैं—(1) अन्तर्विरोध, (2) प्रसंग विरोध, (3) विषय विरोध, (4) अवान्तर विरोध, (5) शैली विरोध, (6) पुरुक्ति, (7) वेद विरोध। उपलब्ध मनुस्मृतियों में कुल श्लोक संख्या 2685 हैं। प्रक्षेपानुसंधान के बाद 1471 श्लोक प्रक्षिप्त सिद्ध हुए और 1214 मौलिक। इन श्लोकों में भी 54 श्लोक ऐसे हैं, जिनका प्रचलित अर्थ ठीक नहीं है। इस प्रकार केवल लगभग चालीस प्रतिशत मनुस्मृति ठीक बचती है।' उसके विषय में डॉ० साहब लिखते हैं—'अभी इस अनुसंधान कार्य को अन्तिम नहीं कहा जा सकता। हो सकता है कि कुछ प्रक्षिप्त श्लोक दृष्टिगत न हो पाए हों अर्थात् कुछ श्लोक इन आधारों की पकड़ में न आ सके हों। इसलिए इतना कार्य करने के बाद भी इस विषय में कार्य करना शेष रह जाता है।' यह है मनुस्मृति का सच जो सत्यान्वेषी आप सब सज्जनों को जानना जरूरी है। ऋषि की तुला पर-सत्यार्थप्रकाश तृतीय समुल्लास पृष्ठ संख्या-64-65 पर ऋषि दयानन्द परित्याग के योग्य ग्रन्थों के नाम लिखकर अन्त में लिखा-ये सब कपोलकल्पित मिथ्या ग्रन्थ हैं।

प्रश्न-क्या इन ग्रन्थों में कुछ भी सत्य नहीं?

उत्तर-थोड़ा सत्य तो है, परन्तु इसके साथ बहुत-सा असत्य भी है। इससे जैसे अत्युत्तम अन्न विष से युक्त होने से छोड़ने योग्य होता है, वैसे ये ग्रन्थ हैं।

प्रश्न-जो त्याज्य ग्रन्थों में सत्य है उसका ग्रहण क्यों नहीं करते? **उत्तर**-जो-जो उनमें सत्य है, सो-सा वेदादि सत्य शास्त्रों का है और मिथ्या उनके घर का है। वेदादि सत्य शास्त्रों के स्वीकार से सब सत्य का ग्रहण हो जाता है। जो कोई इन मिथ्या ग्रन्थों से सत्य का ग्रहण करना चाहे तो मिथ्या भी उनके गले लिपट जाए। आर्यसमाज के चौथे नियम में लिखा है-सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। इन पंक्तियों से किसी एक व्यक्ति ने भी सत्यार्थप्रकाश ग्रहण कर मिथ्यार्थ का परित्याग किया तो मैं लेखन का सफल समझूँगा।

संसार में जीने की कला : सामान्य सूत्र

❑ डॉ. राजबाला आर्या, संस्कृत प्रवक्ता, आर्य कन्या गुरुकुल मोर माजरा (करनाल) मो० 9416368719

सृष्टि में ईश्वर, जीव और प्रकृति-ये तीनों शाश्वत तथा अनादि हैं अर्थात् इन तीनों के प्रारम्भ होने का तथा समाप्ति का कोई समय नहीं है। ईश्वर-सत अर्थात् सदैव रहने वाला, चित अर्थात् गति करने वाला चैतन्य स्वरूप तथा आनन्द स्वरूप अर्थात् स्वयं में ही आनन्द का स्रोत है। ईश्वर में निहित आनन्द नैमित्तिक अर्थात् किसी माध्यम से न होकर नैसर्गिक है। नैमित्तिक आनन्द किसी माध्यम द्वारा प्राप्त होता है और स्थायी न होकर क्षणभंगुर ही होता है। इस आनन्द की अनुभूति आनन्द प्राप्तकर्त्ता को उसी काल तक ही रहती है, जब तक कि आनन्द प्राप्तकर्त्ता का सम्बन्ध आनन्द के उत्पन्न करने वाले स्रोत से रहता है।

क्षणभंगुर अर्थात् कुछ काल तक रहने वाले आनन्द की प्राप्ति के लिए मनुष्य ने सृष्टि की रचना से लेकर आज तक अनेकानेक आनन्द के स्रोतों का आविष्कार किया है। परन्तु दुःख है कि एक से एक बढ़कर आनन्द के स्रोतों के उपलब्ध होते हुए भी तथा इनसे भरपूर उपयोग उठाने में समर्थ मनुष्य भी आज वस्तुतः आनन्द से वंचित हैं। इसका मुख्य कारण है—परमात्मा के सच्चे स्वरूप को न जानना और न मानना तथा संसार में जीवन जीने की कला से अनभिज्ञ होना। जीवन में जीने की कला को जानने और सीखने के लिए मनुष्य को कुछ नियत अवस्थाओं का चयन करना आवश्यक है।

इन चार अवस्थाओं का चयन किसी के कहने-सुनने के आधार पर न करके अपितु वेद तथा वेदसम्मत शास्त्रों के आधार पर करना होगा।

1. सबके साथ यथायोग्य व्यवहार-जीवन में एक बार जिसके साथ जो सम्बन्ध मान लिया है, उसके साथ ईमानदारी से अपने कर्त्तव्य का पालन करें और बदले में उससे कुछ प्राप्त करने की कामना न करें।

2. सेवा ही परमो धर्म-प्राप्त मनुष्य योनि (देह) केवल सुख प्राप्त करने हेतु ही नहीं, अपितु इस देह की सार्थकता है। सभी जीवों (प्राणियों) की सेवा, संसार में जन्म देने के माध्यम माता-पिता के ऋण से कभी अनृण नहीं हो सकता। वर्तमान में मनुष्य कितना भी धनी तथा यश से सम्पन्न हो, सम्माननीय या विद्वान् हो, इसका सारा श्रेय माता-पिता को ही जाता है। शिशु अवस्था में जब बैठना नहीं जानते थे तो बैठना किसने सिखाया, चलना नहीं जानते थे तो चलना किसने सिखाया, भोजन का एक ग्रास भी नहीं उठा सकते थे तो किन हाथों ने हमें खिलाया? माता-पिता ने ही शिक्षा, दीक्षा देकर हमें इस योग्य बनाया कि हम आज सब करने में समर्थ हैं। ऋषियों ने ठीक ही कहा है—

देवपितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यम्, मातृदेवो भव, पितृदेवो भव। (तैत्तियोपनिषद्-शिक्षावल्ली 1/22)

देव और माता-पितादि की सेवा करने में कभी प्रमाद (आलस्य) मत कर, माता को देव मान, पिता को देव मान।

3. समय-समय मूल्यवान है, इसे व्यर्थ नष्ट न करो, आप समय देकर धन पैदा कर सकते हैं, दूसरों की सेवा कर सकते हैं, विद्वान् बन करके कीर्ति-यश कमा सकते हैं तथा संसार की सभी वस्तुएँ प्राप्त कर सकते हैं, परन्तु स्मरण रहे सब कुछ देकर समय प्राप्त नहीं कर सकते। समय की गति को रोका नहीं जा सकता। समय का उपयोग अच्छी पुस्तकों का स्वाध्याय, जप आदि में करो, विषय भोग, हंसी-दिल्लगी, व्यर्थ बातचीत, खेल-तमाशा आदि में समय नष्ट न करो। समय को परमात्मा के चिन्तन और मनन में लगाओ।

4. बच्चों को अच्छी शिक्षा दो-बच्चों को सत्य बोलने तथा धर्म के नियमों का पालन करने, बड़ों का सम्मान करने, बराबर वालों से मित्रता तथा छोटों से प्रेम करने की शिक्षा दो, जिससे वे सदाचारी व सद्गुणी बनें। बच्चों के सामने गाली-गलौच तथा माता-पिता आदि से लड़ाई-झगड़ा या बुरा व्यवहार न करो, उनकी सेवा करो। बच्चों पर पड़े संस्कार ही आपकी वृद्धावस्था में आपके काम आयेंगे। जैसा आप अपने माता-पिता आदि से व्यवहार करोगे वैसा ही वृद्धावस्था में आपके बच्चे आपसे करेंगे।

स्वयं सादगी में रहो, बच्चों को सादगी से रखो। उनको बढ़िया और नित नए फैशन की ड्रेस पहनाकर उन्हें शौकीन न बनाओ। वस्त्रों पर ध्यान न देकर उनके आचरण पर ध्यान दो। लड़कियों को उल्टी शिक्षा न दो। उन्हें यह न सिखाओ कि ससुराल में ननद, जेठानी, सास आदि तो काम

क्रमशः पृष्ठ 11 पर......

वेदप्रचार एवं आर्यसमाजों में गुटबाजी क्यों?

❑ सूबेदार करतारसिंह आर्य सेवक आर्यसमाज गोहाना मण्डी (सोनीपत)

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेद प्रचार-प्रसार के लिये 1875 में बम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की थी। मानव निर्माण का आधार वेद है। वेद ईश्वरीय ज्ञान है। परमात्मा ने

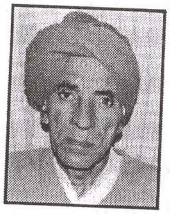

सृष्टि की रचना करके हम संसार में किस प्रकार सुखपूर्वक रह सकते हैं। इसका उपदेश वेद में किया है।

आर्यसमाज के देशभक्ति और ईश्वर भक्ति के कार्यों से प्रभावित होकर पंडित मदनमोहन मालवीय ने लिखा था कि मुझे यह लिखने में कतई संकोच नहीं है कि ईसाइयत और इस्लाम के आक्रमणों से भारत और भारतीय एवं भारत की रक्षा के लिये जितनी मुसीबतों का और चुनौतियों का सामना आर्यसमाज ने किया अन्य हिन्दू जातियों ने नहीं किया। श्री रामधारी सिंह दिनकर व मालवीय जी की भावनायें तो यह कह रही हैं कि हिन्दुओं का असली रक्षक आर्यसमाज ही है। देश की आजादी में इतिहास लेखक कांग्रेस के नेता पट्टाभिसीता रमैया ने लिखा है कि देश की आजादी में आर्यसमाज का 85 प्रतिशत सहयोग रहा है।

भारतीय सच्ची वैदिक शिक्षा एवं संस्कृति के कारण हमारा देश जगतगुरु कहलाया था, परन्तु आज उस भारतीय शिक्षा एवं संस्कृति को समाप्त करके राजनेता काले अंग्रेज झूठी पाश्चात्य शिक्षा एवं संस्कृति का प्रचार-प्रसार जोरों पर कर रहे हैं। संस्कृत भाषा जो संसार की सभी भाषाओं की जननी है। उसी संस्कृत भाषा में वेद शास्त्र एवं उपनिषदों की उपलब्धि है। संस्कृत भाषा को हमारे काले अंग्रेज नामोनिशान मिटाने पर तुले हुए हैं। प्रत्येक देश की राष्ट्रभाषा उस देश की रीड की हड्डी मानी जाती है। हमारे देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी को भी काले अंग्रेज समाप्त करने पर तुले हैं। विदेशी भाषा पढ़ना बुरा नहीं है लेकिन अपनी राष्ट्र भाषा को विदेशी भाषा से अधिक महत्त्व देना चाहिये तभी देश उन्नत हो सकता है। महात्मा गांधी ने कहा था कि अंग्रेजियत कायम रहे और अंग्रेज चले जायें, ऐसी आजादी हमें नहीं चाहिए। भारतीय सच्ची वैदिक शिक्षा एवं संस्कृति के कारण हमारा देश जगद्गुरु कहलाया था। परन्तु अब पाश्चात्य शिक्षा एवं संस्कृति से प्रभावित होकर हम भारतीयों के मन में भी यह एक मिथ्या धारणा बन गई है कि अधिकाधिक धन और धन प्राप्त होने वाले साधनों को प्राप्त करके अपने समस्त दुःखों को दूर कर देंगे। यह मिथ्या धारणा ऐसी है कि जैसे अग्नि में अधिकाधिक घी डालकर अग्नि को शान्त करना।

दौलत से रोटी मिल सकती है,
पर भूख नहीं मिल सकती।
दौलत से सुख मिल सकता है,
परन्तु शान्ति नहीं मिल सकती।

किसी भी समाज के संगठन के लिए निश्चित सिद्धान्तों की बहुत बड़ी आवश्यकता है। हिन्दू जाति के वर्तमान असंगठन का बड़ा कारण यह है कि इसके सिद्धान्त निश्चित नहीं रहे। जो आया उसने मनमानी की और हिन्दू जाति के टुकड़े-टुकड़े हो गये। महर्षि दयानन्द ने इसी रोग का निराकरण किया और समस्त जाति को एक सूत्र में बांधने का प्रयत्न किया। जब तक आर्यसमाज ऋषि के बताये हुए नियमों-उपनियमों को अपनाएगा तो उसकी उन्नति ही होगी। नहीं तो आर्यसमाज संस्था बर्बाद ही हो जाएगी। अतः मेरी सभी आर्यसमाज के सदस्यों से प्रार्थना है कि आर्यसमाज के मालिक मत बनो आर्यसमाज के सेवक बनो, क्योंकि आर्यसमाज को नेताओं की आवश्यकता नहीं है, आर्यसमाज को सेवकों की आवश्यकता है।

आर्यसमाजों में सिद्धान्त विरुद्ध कार्यों को बढ़ाने में अधिकारी, विद्वान् एवं सदस्य आदि सभी दोषी हैं। सच यह है कि महर्षि और आर्यसमाज के सिद्धान्तों के प्रति जो हमारी दृढ़ता, निष्ठा, कट्टरता तथा वचनबद्धता होनी चाहिए वैसी नहीं है। हम केवल पद लाभ मान, महत्त्व व अहंकार की पूर्ति के लिये आर्यसमाजी हैं, आर्य नहीं हैं। इसी कारण आर्यसमाजों में बिखराव, अराजकता, अनुशासनहीनता आदि बढ़ रही है। हमारे जीवनों से धार्मिकता एवं आध्यात्मिकता समाप्त हो रही है।

शरीर नित्य रहने वाला नहीं है, धन-सम्पदा भी अनित्य है और मृत्यु हमेशा सिर पर मंडराती रहती है, इसलिए शीघ्र धर्म-संग्रह करना चाहिए। परन्तु आज बड़े दुःख के साथ कहना पड़ता है कि आज स्वार्थी नेता लोग आर्यसमाजों में भी आधुनिक राजनीति का प्रवेश कराकर आर्यसमाजों को भी बरबाद करने पर तुले हुए हैं, क्योंकि उन्हें विश्वास

हो गया है कि हमारी गलत बातों का खण्डन आर्यसमाज ही कर सकता है। इसलिये आर्यसमाजों में अपने पिछलग्गुओं का प्रवेश करके अपने स्वार्थपूर्ति के लिये सफलता प्राप्त करना चाहते हैं। ऐसे स्वार्थी राजनेताओं के पिछलग्गुओं से प्रार्थना है कि उन्हें अपने राजनेताओं से न डरकर परमात्मा से अवश्य डरना चाहिए। स्वार्थी राजनैतिक पार्टियों से धर्म को बड़ा मानना चाहिए। क्योंकि कितना ही अच्छा धर्म क्यों न हो, जब तक उसके नियमों व सिद्धान्तों को अपने जीवन में धारण करके दिखाने वाले सदस्य नहीं होंगे तब तक धर्म उन्नति नहीं कर सकता। जो सदस्य स्वार्थी राजनेताओं से न डरकर परमात्मा से डरेगा तभी धर्मात्मा होगा अन्यथा नहीं। परमात्मा से डरना सत्य पर चलना है।

एक दिन पंडित मोहनलाल ने महर्षि दयानन्द से प्रश्न किया कि भारत का पूर्ण हित और हिन्दू जाति की उन्नति कब होगी ? महर्षि ने उत्तर दिया कि उसका सार यह है कि एक धर्म, एक भाषा और एक लक्ष्य बनाये बिना ऐसा होना दुश्कर है। इसलिए मैं चाहता हूँ कि धर्म, भाषा और भाव में एकता उन्नत करें। पं० मोहनलाल ने इस पर आपत्ति की कि जब आपका उद्देश्य एकता करने का है तो आप मत-मतान्तरों का खण्डन क्यों करते हैं। ऐसा खण्डन करने से एकता हो ही नहीं सकती है। महर्षि ने उत्तर दिया कि धर्माचार्यों और नेताओं की असावधानी और प्रमाद से जाति के आचार-विचार रहन-सहन दूषित हो जाते हैं और भाव एक नहीं रहते। यदि हिन्दू जाति की यही दशा हुई और सम्भाला नहीं गया तो यह नष्ट हो जायेगी। धर्माचार्यों के प्रमाद के कारण करोड़ों मुसलमान हो गये और अब ईसाई होते जा रहे हैं। यदि हिन्दू जाति को कड़वे उपदेशों के कोड़े से न जगाया गया और कुरीतियों और कुनीतियों को नष्ट न किया गया तो इसकी मृत्यु में संदेह ही क्या है। मैं यह काम किसी स्वार्थ से तो कर ही नहीं रहा हूँ। इसके कारण अनेक कष्ट मैं सहता हूँ, गालियाँ और ईंट-पत्थर खाता हूँ, विष तक भी मुझे दिया जा चुका है, परन्तु जाति और धर्म के लिये सब कुछ सहन करता हूँ।

महर्षि का वचन सुनकर पं० मोहनलाल गद्गद् हो गये और भक्तिरस से सने हुए शब्दों में कहा कि यदि दो-चार धर्माचार्य भी आपके विचार के हो जायें तो थोड़े समय में ही हिन्दू जाति का बेड़ा पार हो सकता है।

धर्म की साधारण परिभाषा कर्त्तव्य का पालन करना ही होता है। आज राजनेताओं का कर्त्तव्य का पालन बनता जा रहा है कि नोट बगाओ और वोट कमाओ यानि नोट बगाये हैं वोट कमाने के लिए जनता उन नोटों का प्रयोग जैसे मर्जी करे, 'खाओ-पीओ ऐश करो, राजनेताओं की जेब में वोट भरो।'

महर्षि दयानन्द ने हिन्दू जाति को एक ही जाति माना है परन्तु स्वार्थी राजनेताओं ने हिन्दू जाति को 35 व 36 जातियों में नोट और वोट कमाने के लिए बांटा वआरक्षण भी प्रदान कर दिया। परन्तु अब नोट और वोट की कमाई आर्यसमाजों में बढ़ने के कारण गुटबाजी एवं जात-पात बढ़ने का सबसे बड़ा कारण बनता जा रहा है। अतः हिन्दू जाति को बरबाद होने से बचाने के लिए दयानन्द का सेवक बनना परम आवश्यक है।

संसार में जीने की कला.... पृष्ठ 9 का शेष....

करती रहे, पर तू मत करना। अपने पति की कमाई को अपने पास ही रखना, ऐसी सीखी लड़की जब बहू बनेगी तो ससुराल में निश्चय ही कलह उत्पन्न होगा, परिवारजनों की मानसिक शान्ति समाप्त होगी। मानसिक शान्ति के समाप्त होने से शरीर रोगों का घर बन जाता है।

प्रशंसा करो-बच्चों की उनके अच्छे कार्यों की प्रशंसा करो। माता-पिता, कुटुम्बियों की, मित्रादि की तथा सम्बन्धियों की पीठ पीछे प्रशंसा करो। उनकी कमियों की बुराई करनी ही है तो मित्रवत् तथा ईर्ष्या, द्वेष, अहंकार आदि से रहित होकर उनके सामने सुधार की दृष्टि से करो।

पुत्र का विवाह बराबर के परिवार में करो, बहू के मायके से कोई वस्तु आवे तो उसको प्रशंसा करो, ऐसी आई, वैसी आई है, ऐसा मत कहो। बहू को बुरा लगेगा। अपने माता-पिता की निन्दा किसी को अच्छी नहीं लगती। परिवार में सुख-शान्ति बनाये रखने की कोशिश करो।

व्यक्तिगत खर्च कम करो-व्यक्तिगत खर्च केवल शरीर निर्वाहार्थ ही करो। साधारण पौष्टिक भोजन, साधारण वस्त्र तथा साधारण रहन-सहन रखो। खर्चीला जीवन अपनी स्वतन्त्रता को खोना है। यदि ज्यादा पैसा कमाना हाथ की बात नहीं, तो कम खर्च करना तो हाथ की बात है। ज्यादा पैसा कमाने की इच्छा से ग्रसित मनुष्य झूठ, कपट, बेईमानी, धोखेबाजी, विश्वासघात आदि का सहारा लेकर परिणाम में दुःख ही प्राप्त करता है। व्यक्तिगत खर्च कम करके, अपनी इच्छाओं को कम करके हम इससे बच सकते हैं।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

डर के साये में अध्यापक वर्ग

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

पिछले लगभग एक दशक से हरयाणा राज्य में शिक्षा के क्षेत्र में ऐसा वातावरण बन गया है जिसके चलते अध्यापक वर्ग भय व शंका के साये में जी रहा है। विद्यार्थियों से मारपीट, छेड़छाड़ के जितने भी मामले सामने आए मीडिया

में एक भी मामले में अध्यापक के पक्ष को न तो सम्बन्धित अध्यापक द्वारा ही रखने का स्वतन्त्र अवसर दिया गया और न ही मामले के पटाक्षेप के बाद यदि पक्ष अध्यापक का सकारात्मक है, तो उस पर भी रोशनी डालने का कोई प्रयास नहीं हुआ। इस सारे प्रकरण में आदर्श अध्यापक के गुणों, अध्यापक के महत्त्व का भी समानान्तर वर्ण होता रहता या यदा-कदा भी होता रहता तो भी यह स्थिति न बनती। तस्वीर का एक ही पक्ष प्रस्तुत करने से यहाँ स्थिति वह बन गई है जिसमें पिता व सन्तान का अलगाव हो जाता है। इस स्थिति के कारण व विचार पर निराकरण के उपाय अपनाने होंगे। निदान सदैव आर्षग्रन्थों, शास्त्रों में मिलता है। तभी संशय की स्थिति मिटती है। जो नियम जिसमें पढ़ने-पढ़ाने के नियम भी बनाए गए थे, ये नियम काल विशेष में आबद्ध न होकर सार्वकालिक होते हैं। जैसे-यथार्थ व सत्य आचरण से पढ़ना-पढ़ाना, सहनशील होकर, इन्द्रिय-संयमी होकर पढ़ना-पढ़ाना आदि नियम क्या काल विशेष में आबद्ध हो सकते हैं? इसी भांति महाविद्वान्, व्याकरण महाभाष्य, योगदर्शन जैसे आर्षग्रन्थों के रचयिता महर्षि पतंजलि का प्रसिद्ध सन्देश है कि **''लाड़ना से बालक दोषयुक्त तथा ताड़ना से गुणयुक्त होते हैं। माता-पिता व अध्यापक बालकों के निर्माण के लिए उनकी ताड़ना करते हैं, न कि द्वेष के चलते।''** ऋषि दयानन्द जी इस प्रकरण की व्याख्या में इतना अवश्य लिखते हैं कि बालक की ऐसी ताड़ना न करें कि जिससे अंगभंग वा मर्म में लगने से विद्यार्थी वा लड़के-लड़की व्यथा को प्राप्त हो जायें। मंत्रों की, प्रसंग-प्रकरण की ऐसी व्याख्याएं व प्रकाश डालने से ही दयानन्द सरस्वती ऋषि कहलाए।

शास्त्रों में सज्जन की तुलना नारियल से की गई है जो ऊपर से कठोर व अन्दर से मुलायम होता है। आदर्श अध्यापक भी ऐसा ही होता है। ऐसे अध्यापकों को ही आज तक याद किया जाता है। अनेक बालक ऐसे देखे जाते हैं, जो डांट-डपट के बाद सुधार में आ जाते हैं। दूसरे विकल्प जैसे बुरे आचरण के चलते विद्यालय से निकालना, सुधार गृह तक भेज देना, क्या इन विकल्पों से पहले आध्यापक की डांट-डपट का विकल्प होना ही नहीं चाहिए? एक अनुभवी आदर्श अध्यापक से बेहतर विद्यार्थी के लिए कौन काऊंसलर व मनोवैज्ञानिक हो सकता है? आज वातावरण ऐसा बना दिया गया है कि जैसे अध्यापक वर्ग अपराधी हो और बाकी सब तन्त्र इन अपराधियों से बच्चों की सुरक्षा में लगा हो? इस वातावरण में बालकों के अन्दर जो अनावश्यक शिकायत देने की मनोवृत्ति पनप रही है इसके निदान के लिए क्या कभी किसी ने प्रयास किया? इसका निदान भी आदर्श अध्यापक ही कर सकते हैं।

इससे पहले कि स्थिति और भयावह हो, अध्यापक-छात्र कोई विवाद मिटाने के लिए सरकारी अनुमोदन पर बनी आदर्श अध्यापकों की कोई समिति बननी चाहिए, ब्लॉक स्तर तक भी ऐसी समितियों का गठन हो और सम्बन्धित विवाद के निर्णय में इनकी अनुशंसा ली जाए। अध्यापकों को भी चाहिए कि अपने जीवन सदैव आदर्श में ढालते रहें। बालकों के हित में कार्य करने वाले विभिन्न संगठनों को यह अवश्य ध्यान रखना होगा कि यह आयु स्वच्छन्दता चाहने वाली होती है, जिसमें उत्तरदायित्व बोध कराना पड़ता है। एक आदर्श अध्यापक ही विद्यार्थी का सच्चा संरक्षक हो सकता है। ऐसी परिस्थिति न बनाएं जिसमें एक आदर्श अध्यापक को भी डर, शंका, प्रताड़ना झेलनी पड़े।

शोक-समाचार

हिन्दी रक्षा आन्दोलन के स्वतन्त्रता सेनानी श्री रणसिंह आर्य गांव अटायल जिला रोहतक का लगभग 80 वर्ष की आयु में दिनांक 16.09.2018 को स्वर्गवास हो गया। हिन्दी रक्षा आन्दोलन के दौरान वे रोहतक व हिसार जेल में रहे। वे आर्यसमाज के कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेते थे। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा उनके निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है। परमात्मा से दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा उनके परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—सभामन्त्री

समलैंगिकता सम्बन्ध नहीं अपराध है

सुप्रीम कोर्ट द्वारा समलैंगिकता को धारा-377 के अन्तर्गत अपराध की श्रेणी से हटा दिया गया है। अपने आपको सामाजिक कार्यकर्त्ता कहने वाले, आधुनिकता का दामन थामने वाले एक विशेष बुद्धिजीवी वर्ग द्वारा सुप्रीम कोर्ट का निर्णय पर बहुत प्रसन्न हो रहे हैं। उनका कहना है कि अंग्रेजों द्वारा 1861 में बनाया गया कानून आज अप्रांसगिक है। धारा-377 को यह जमात सामाजिक अधिकारों में भेदभाव और मौलिक अधिकारों का हनन बताती है। समलैंगिकता का समर्थन करने वाले पक्ष का कहना है कि इससे की रोकथाम करने में रुकावट होगी क्योंकि समलैंगिक समाज के लोग रोक लगने पर खुलकर सामने नहीं आते।

अधिकतर धार्मिक संगठन धारा-377 के विरोध में हैं। उनका कहना है कि यह करोड़ों भारतीयों का जो नैतिकता में विश्वास रखते हैं उनकी भावनाओं का आदर है। आइये समलैंगिकता को प्रोत्साहन देना क्यों गलत है इस विषय की तार्किक विवेचना करें।

हमें इस तथ्य पर विचार करने की आवश्यकता है कि सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले का समाज में व्यापक असर पड़ने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता। हमें यह सोचना होगा कि भारत का समाज कहाँ खड़ा होने जा रहा है। हम लोग अपने आने वाली पीढ़ी को कौन-सा पाठ पढ़ायेंगे। बहरहाल सर्वोच्च न्यायालय ने तो अपना निर्णय दे दिया, लेकिन समाज को भी अपनी दिशा तय करनी होगी। भारत विविधताओं का देश है। यहाँ इस प्रथा को बढ़ावा देने से हमारी संस्कृति पर असर पड़ेगा। देश के सामाजिक व सांस्कृतिक मूल्यों में जरूर पतन दिखेगा।

समलैंगिकता को जायज ठहराने से अब समाज में आपसी प्रेम का घिनौना खेल खुलकर दिखेगा। समलैंगिकता को इस नजरिये से भी उचित नहीं ठहराया जा सकता कि हिन्दुस्तान की संस्कृति इसकी छूट नहीं देती। यह तो एनीमल कल्चर है। मेडिकल साइंस में भी इसे प्रकृति के विरुद्ध माना गया है। आपसी सहमति से सारी हदें पार करने की इलाज सनातन परम्परा में भी यह उचित नहीं है। लोग जो काम अभी तक चोरी छिपे करते थे, अब वह सार्वजनिक स्थानों पर करेंगे। सबको स्वतंत्रता है कि उसे क्या चुनना है, तो फिर आत्महत्या जैसे अपराधों पर भी स्वतन्त्रता होनी चाहिए वह उसका जीवन है जिए या मरे। क्या उसे चुनने देंगे?

समलैंगिक सम्बन्ध अपराध नहीं है। यह अपराध नहीं अपराध की जड़, उसकी जननी है।

माननीय न्यायाधीशो! अनैतिक स्वच्छन्दता अनैतिक अधिकार, अनैतिक स्वतन्त्रता, अनैतिक पसंद से यह समाज नहीं चल सकता। यह समाज और देश चला रहा है तो उसका कारण नैतिकता ही है। नैतिकता न होती तो संविधान नहीं होता, यदि नैतिकता न हो तो न्यायालय ही नहीं होता और नैतिकता के बिना कभी कोई न्यायाधीश नहीं बनता।

अब समय आ गया है सरकार और न्यायपालिका को चाहिए कि व्यभिचार और चरित्रहीनता को परिभाषित करें। नहीं तो समाज को पशुवत् होकर विध्वंस होते देर नहीं लगेगी। महामहिम राष्ट्रपति का कर्त्तव्य बनता है कि इस अधकचरी न्यायप्रणाली को ठीक करें। जो न्यायाधीश जिस विषय का जानकार है, सच्चा और कर्त्तव्यनिष्ठ है, वही उस केस को देखे। **(साभार-आर्यमित्र)**

पत्रकार संजीव मंगला का निधन

पलवल-20 सितम्बर, 2018। दैनिक जागरण के पत्रकार व अधिवक्ता संजीव मंगला का लगभग 52 वर्ष की आयु में निधन हो गया। मंगलवार की रात पेट में दर्द होने के कारण उन्हें नागरिक हस्पताल ले जाया गया जहाँ चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। बुधवार को पंचवटी मंदिर के समीप स्थित मुक्तिधाम में पलवल, फरीदाबाद व आस-पास के क्षेत्रों से सैकड़ों लोगों की मौजूदगी में उनका अन्तिम संस्कार किया गया। वे कई बार आर्यसमाज पलवल के अध्यक्ष व श्रमजीवी पत्रकार संघ के जिलाध्यक्ष व पलवल बार एसोसिएशन के अध्यक्ष भी चुने गए। वर्ष 2001 में उन्हें नगर सुधार न्यास का चेयरमैन नियुक्त किया गया था। वे आर्यसमाज के कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेते थे। उनके अन्तिम संस्कार में जिला उपायुक्त डॉ. मनीराम शर्मा, हरयाणा के पूर्व मंत्री सुभाष कत्याल व जगदीश नायर, पलवल के पूर्व विधायक सुभाष चौधरी, होडल के पूर्व विधायक रामरतन, कांग्रेस विधायक कर्णसिंह दलाल, श्री दयानन्द बैंदा आदि अनेक गणमान्य व्यक्ति शामिल हुए।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा उनके निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है। परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति देवे तथा उनके परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। **—सभाप्रधान**

आज समाज कहाँ जा रहा है?

देखो आज समाज कहाँ जा रहा है?
पापाचार, व्यभिचार हर रोज हो रहा है॥
अपराध और कुकृत्य नित्य हो रहे हैं।
निराशावाद व भौतिकवाद में लिप्त हो रहे हैं।
दुर्लभ मानव जीवन को सब व्यर्थ खो रहे हैं।
वैदिक शिक्षा कल्याणी से अब दूर हो रहे हैं।
ढोंग-पाखण्ड और अन्धविश्वास अब अधिक फैल रहा है।
देखो आज समाज..... ?

सत्य ज्ञान नहीं मिलने से मानव भ्रमित हो जाता है।
धूर्त चालाक मक्कार बाबाओं के झांसे में फंस जाता है।
गुड़ लपटी में चिमटी मक्खी जैसे, दलदल में धंस जाता है।
मकड़जाल में जकड़ गया, निकल नहीं फिर पाता है।
ऐसे मतिभ्रम लोगों का जीवन नित्य नष्ट हो रहा है।
देखो आज समाज........ ?

नैतिक मूल्य सब भुला दिये, नहीं आँखों में शर्म रही।
माँ-बाप बुजुर्गों सभ्य जनों की, नहीं अब शर्म रही।
रहन-सहन और खान-पान की, अब दिनचर्या बदल रही।
इंटरनेट मोबाइल से सारी दुनिया अब चल रही।
वेबसाइट और यूट्यूब चित्रों से, विष घोला जा रहा है।
देखो आज समाज........ ?

पुरखों ने कभी सोचा था, मानव इतना गिर जाएगा।
कातिल और कसाई बन, सितम अबला पर ढाएगा।
कामाग्नि से अन्धा हो, फर्क नहीं बहन-बैटी में कर पाएगा।
वृद्धा और अबोध बालिका को, हवश का शिकार बनाएगा।
अक्सर परिवार परिचितों द्वारा यह कुकृत्य किया जा रहा है।
देखो आज समाज........ ?

भूल गये गौरव अपना, नहीं इतिहास का ध्यान रहा।
वैदिक श्रेष्ठ मूल्यों की संस्कृति का, नहीं हमें ज्ञान रहा।
युगपुरुष मर्यादापुरुषोत्तम की, नहीं मर्यादाओं का मान रहा।
योगिराज श्रीकृष्ण की गीताका, नहीं हमको अब मान रहा।
दुर्व्यसनों और कुण्ठाओं से मानव अब जर्जर हो रहा है।
देखो आज समाज........ ?

वेद की विद्या लुप्त होने से, अन्धकार यहाँ छाया है।
दुर्भाग्य देश भारत का, गौरवमय इतिहास भुलाया है।
इन तथाकथित बाबाओं ने, कहर भोली जनता पर ढहाया है।
ठोकर बहुत खा चुके सब, अब वक्त संभलने का आया है।
ऋषि दयानन्द का जीवन, हम सबको ललकार रहा है।
देखो आज समाज........ ?

—देशराज आर्य, रेवाड़ी, मो० 9416337609

डॉ. भवानीलाल भारतीय का निधन

आर्यसमाज के वैदिक विद्वान्, विचारक, वक्ता, लेखक एवं चिन्तक रूप में अपनी अमूल्य सेवाएं देने वाले प्रख्यात साहित्यकार डॉ. भवानी लाल भारतीय का दिनांक 11 सितम्बर 2018 को 90 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका जन्म 1 मई 1928 को राजस्थान के नागौर जिले में स्थित परवतक्ष में हुआ था। अपने छात्र जीवन में ही वे आर्यसमाज से जुड़े। पंजाब विश्वविद्यालय दयानन्द शोधपीठ के डायरेक्टर भी रहे। आपके निर्देशन में अनेक विद्यार्थियों ने अपने शोध-कार्यों को पूर्ण किया।

स्व० श्री भवानीलाल भारतीय जी अपने जीवन में भारत सहित अनेक देशों में आर्यसमाज एवं वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में संलग्न रहे। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के अनुसार 12 सितम्बर 2018 को किया गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा उनके निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं उनके परिवार को इस असहनीय दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—उमेद शर्मा, सभामन्त्री

जिला स्तरीय योग प्रतियोगिता सम्पन्न

हर्ष (11वीं)

इन्द्रसिंह (9वीं)

दिनांक 29-30 अगस्त 2018 को जिला स्तरीय योग प्रतियोगिता फरीदाबाद सै०12 खेल परिषद् के क्रीडा प्रांगण में हुई जिसमें गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद के ब्रह्मचारियों ने भाग लिया।

इस प्रतियोगिता में ब्रह्मचारी हर्ष कुमार सती कक्षा-उत्तर मध्यमा-1 (11वीं) ने 15-19 के वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त किया। ब्रह्मचारी इन्द्रसिंह कक्षा-पूर्व मध्यमा-1 (9वीं) ने 12-15 वर्ष के वर्ग में तृतीय स्थान प्राप्त किया।—प्राचार्य, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, फरीदाबाद

आर्यसमाज मन्दिर कलोई में भव्य भवन हॉल बनाने की ग्रामवासियों से प्रार्थना की और ग्रामवासियों ने प्रार्थना स्वीकार की—स्वामी धर्ममुनि

कलोई (झज्जर) दिनांक 2.9.18 स्वामी शक्तिवेश जी के जन्म दिवस पर आर्यसमाज मन्दिर कलोई (झज्जर) में यज्ञ-भजन-प्रवचन-अभिनन्दन समारोह सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। प्रारम्भ में यज्ञ हुआ यजमान देवेन्द्र आर्य बने। अनेक महानुभावों ने यज्ञोपवीत ग्रहण किया और पितृऋण, ऋषिऋण, देवऋण और परमात्मा के ऋण से अनृण होने का संकल्प लिया। मुख्यवक्ता योगाचार्य योगेन्द्र वैदिक आश्रम रेवाड़ी, स्वामी सच्चिदानन्द जी आत्मशुद्धि आश्रम फर्रुखनगर, गुरुकुल झज्जर के मंत्री राजबीर आर्य, पहलवान प्रेमदेव खुड्डन, प्रदीप शास्त्री, डॉ. एच.एस. यादव, चन्द्रपाल जहाजगढ़, पं० रामकरण, राजेश दीक्षित, चमनलाल यादव, ब्र० कृष्ण, ब्र० नीलमणि, कु० सोनिका, ब्र० आयुष, सतीश रोहिला, पं० जयभगवान, सुभाष आर्य आदि रहे।

आर्यसमाज मन्दिर अहरी की स्थापना में मुख्य सहयोगी श्री उपेन्द्र जी का पं० वेदप्रिय, भूराजप्रिय आर्य की नौजवान टीम ने सार्वजनिक अभिनन्दन किया। लीलू पहलवान, धर्मपाल ए.एस.आई., रामकंवार ठेकेदार, उमेदसिंह माजरी, महावीर बल्लभगढ़, गांव टीकरी से तेजपाल, करतार सिंह, धर्मवीर, दयानन्द, कलोई से धर्मवीर, प्रकाश, करतार, आर्यसमाज झज्जर के प्रकाशवीर, सेठ रामअवतार, कृष्ण शास्त्री, सूर्यप्रकाश, मा० पनसिंह, राजेन्द्र आदि का, होनहार बालक-बालिकाओं को सम्मानित किया गया। योगाचार्य योगेन्द्र जी ने चरक, सुश्रुत आदि वैद्यों की मान्यता के अनुसार स्वस्थ रहने के नुस्खे बताए। स्वामी सच्चिदानन्द, सत्यवीर प्रेरक, राजबीर आर्य आदि महानुभावों ने स्वामी शक्तिवेश जी को निर्भीक, संघर्षशील संन्यासी बताया। स्वामी धर्ममुनि जी ने कलोई आर्यसमाज मन्दिर में एक विशाल हॉल की आवश्यकता बताई तथा ओमप्रकाश यादव ने सभी का धन्यवाद किया।

यज्ञ-भजन-प्रवचन-अभिनन्दन कार्यक्रम सम्पन्न

झज्जर, 10.09.18 महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र, भट्ठी गेट झज्जर में वैदिक यज्ञ-भजन-प्रवचन-अभिनन्दन कार्यक्रम हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ। यज्ञब्रह्मा एवं कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ. एच.एस. यादव पूर्व प्राचार्य राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय झज्जर, मुख्य अतिथि एवं मुख्यवक्ता आचार्य यशवीर (रोहतक) मुख्य यजमान श्रीमती मामकौर एवं श्री रतीराम आर्य रहे। लगभग 75 छात्र-छात्राओं ने हाथों के सूक्ष्म व्यायाम का शानदार प्रदर्शन किया। डॉ. एच.एस. यादव ने बताया कि सब बुराइयों का मूल कारण अज्ञानता (असत्यता) के साथ-साथ पर्यावरण के मूलतत्त्व वायु-जल आदि का विषैला होना है। सत्य प्रमाणों के साथ तार्किक सोच से अज्ञानता दूर होती है। वायु-जल की शुद्धि के लिए वृक्ष लगाना तथा गोघृत-जड़ी बूटियों से निर्मित सामग्री से हवन करना चाहिये। आचार्य यशवीर ने बताया कि हमारे लिए सौभाग्य की बात है कि हम ईशकृपा से आर्य बने। आर्यसमाज के लिए सौभाग्य की बात तब होगी जब हमारी वजह से आर्यसमाज संगठन उन्नत होगा। देखने में आता है कि जिन आर्य परिवारों में प्रतिदिन ब्रह्मयज्ञ (निराकार ईश्वर का ध्यान), देवयज्ञ (हवन) एवं अच्छी पुस्तकों का स्वाध्याय प्रतिदिन होता है वही परिवार सच्चे अर्थों में आर्यसमाज रूपी अपनी माँ की उन्नति में सहायक बनते हैं। हमें देवताओं के बारे में शुद्ध ज्ञान होना चाहिए। जगत में 33 देवता हैं, जो इस प्रकार हैं—पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा और नक्षत्र, 8 वसु देवता, 5 प्राण, 5 उपप्राण और जीवात्मा 11 रुद्र देवता, 12 देशी महीने, 12 आदित्य देवता, बिजली (इन्द्र) और यज्ञ (प्रजापति) 2 देवता। सब देवताओं का स्वामी महादेव निराकार परमात्मा है।

आदर्श अध्यापिकाएं श्रीमती सुमित्रा, अनिता एवं विमला देवी ने बताया कि ईश्वर उपासना से ईशकृपा से दिव्य गुणों की प्राप्ति होती है। भजनोपदेशक पं० जयभगवान आर्य, आर्यसमाज झज्जर के प्रधान प्रा. द्वारकादास, वैदिक सत्संग मण्डल झज्जर के प्रधान पं० रमेशचन्द्र वैदिक ने बताया कि आर्य (श्रेष्ठ) व्यक्ति की कथनी-करनी में एकरूपता रहती है। लाला प्रकाशवीर, सूर्यप्रकाश, श्रीभगवानसिंह, ओमप्रकाश यादव, चमनलाल ए.एस.आई., रोशनी आर्या, सोनिया आर्या, रामअवतार, प्रदीप शास्त्री, ब्र० कृष्ण, राजेन्द्र, मा० पनसिंह, महासिंह, आत्माराम, अभिषेक, कार्तिक, मनस्वी, साक्षी, रिमझिम आदि गणमान्य महानुभाव एवं होनहार बच्चे उपस्थित रहे। मुकेश आर्य ने सभी का धन्यवाद किया।

—सुभाष आर्य, झज्जर 9813356991

हमारी मथुरा यात्रा

दिनांक 11 अगस्त 2018 को दो दिवसीय यात्रा आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल पानीपत से मथुरा तक वैदिक धर्म संदेश यात्रा निकाली गई। इस यात्रा को माननीय मा. रामपाल आर्य प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा व वेदप्रचार अधिष्ठाता श्री रमेश आर्य ने ओ३म् का ध्वज दिखाकर यात्रा को रवाना किया। यात्रा पानीपत से मोटर साइकिलों व कारों के काफिले के साथ समालखा में पहुंची यहां पर लोगों को यात्रा के बारे में श्री जगदीश आर्य ने बताया व श्री कुलदीप भजनोपदेशक ने भजन सुनाकर लोगों को स्वामी जी के विषय में बताया। इसके पश्चात यात्रा गन्नौर, मुरथल होते हुए रास्ते में एक विद्यालय मिला जिसका नाम आर्य बन्धु पब्लिक स्कूल सादत नगर, इक्ला, गाजियाबाद मिला जहां यहां पर हमें जलपान किया। स्कूल संचालक का नाम श्री ओमेन्द्र आर्य सुपुत्र श्री ज्ञानेन्द्र आर्य उपमंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश था। श्री ओमेन्द्र आर्य को हम पहले नहीं जानते थे और उन्होंने आचार्य अभय आर्य जी को स्मृति चिन्ह देकर धन्यवाद किया।

इसके बाद यात्रा होडल, हसनपुर मितरौल मथुरा जगह-जगह कार्यक्रम करते हुए हम मथुरा गुरु विरजानन्द की कुटिया के दर्शन किए जहां एक वृद्ध उसकी देखंभाल व रखरखाव करता है। लाईब्रेरी के नाम पर कुछ पुस्तकें रखी थी जो काफी पुरानी थी, लेकिन उनको ताला लगा हुआ था। पूछने पर पता चला कि किसी व्यक्ति ने ताला लगा रखा है। कुटिया की दशा भी ठीक नहीं थी। लाईब्रेरी की अलमारी भी खाली थी। उस व्यक्ति ने कहा कि उसे आर्यसमाज के विषय में कुछ नहीं पता। कुटिया के आगे एक व्यक्ति चूड़ियां बेच रहा था और चूड़ियां अन्दर ड्योढ़ी तक पड़ी थी। यह कार्य आर्यसमाजियों के कर्महीनता को दर्शाता है।

हाय ! जहां से वैदिक धर्म का सूर्य उदय हुआ उस कुटिया में यज्ञ करने का कोई चिन्ह भी नहीं था, जबकि कुछ ही दूरी पर आर्यसमाज का मन्दिर भी है, वहीं पहुंचकर आर्यों से सम्पर्क किया तो उन्होंने आने तक की भी औपचारिकता पूरी नहीं की। मथुरा में ही एक प्रसिद्ध आर्यसमाज के केन्द्र में रुके वहां के संचालक भी मिले उनको कार्यक्रमों की भी सूचना थी फिर भी महोदय ने मिलने पर पानी तक नहीं पूछा।

आर्यसमाज के प्रतिनिधियों का कर्त्तव्य बनता है कि कोई आर्यसमाजी किसी भी क्षेत्र में जाता है तो उसको भोजन आदि की व्यवस्था करें। इस व्यवहार में आर्यसमाज के तपःपूत साधु आचार्य बलदेव जी इस व्यवहार में हमेशा अग्रणी रहते थे। इस यात्रा के संयोजक आचार्य अभय आर्य जी रहे।

—जगदीश आर्य, संदीप आर्य (सहयोगी)

त्रि-दिवसीय क्रियात्मक यज्ञ प्रशिक्षण शिविर

सर्व-कल्याण धर्मार्थ न्यास (पंजी.) पानीपत (हरयाणा) द्वारा जिला सिरसा में स्मृतिशेष पूज्य आचार्य श्री ज्ञानेश्वर जी की स्मृति में 'त्रि-दिवसीय क्रियात्मक यज्ञ प्रशिक्षण शिविर' का आयोजन आर्यसमाज मन्दिर परिसर, सिरसा (हरयाणा) में आचार्य श्री अरुण आर्यवीर जी, तेलंगाना के ब्रह्मत्व में दिनांक 9,10 नवम्बर 2018 को, समय प्रातः 9 से 11 बजे और सायं 3 से 5 बजे तथा दिनांक 11 नवम्बर 2018 (रविवार) प्रातः 9 से 12 बजे तक होने जा रहा है। कार्यक्रम समापन उपरान्त ऋषिलंगर का आयोजन भी है। इसका शुभारम्भ माननीया डॉ. श्रीमती चमेली देवी जी, समाजसेवी, चेयरमैन, जिला परिषद्, पलवल द्वारा किया जाएगा। इस आयोजन का संयोजन आर्यसमाज सिरसा द्वारा किया जा रहा है। इसमें आर्यजगत् के उच्चकोटि के वैदिक भजनोपदेशक डॉ. कैलाश कर्मठ जी, कोलकाता भी पधार रहे हैं तथा इस शुभ अवसर पर गणमान्य अतिथि, विद्वान्, साधु-संन्यासी, समाज सेवी एवं नेता आदि भी पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ायेंगे।

सम्पर्क सूत्र-

श्री भूपसिंह प्रधान-9416440113, श्री भीमकुमार मंत्री-8685887600, श्री यशवीर आर्य कोषाध्यक्ष-9991899811, श्री रामदेव शास्त्री-9416402109

—कमलकान्त आर्य, प्रचार मंत्री,
सर्वकल्याण धर्मार्थ न्यास (पंजी.) पानीपत (हरयाणा)

भूल-सुधार

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका के वर्ष 14 अंक 15 सितम्बर प्रथम में **'दृढ़ चरित्र से बनेगा दृढ़ राष्ट्र'** नामक लेख में भूलवश **'राजा जनक घोषणा करते हैं'** छप गया है। कृपया पाठक **'राजा अश्वपति घोषणा करते हैं'** ऐसा पढ़ें। इस असुविधा के लिए हमें खेद है।

—सम्पादक

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक समाचार-पत्र की सदस्यता ग्रहण कर तथा धार्मिक एवं सामाजिक आयोजनों में 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' को सहयोग राशि भेजकर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में सहभागी बनिये।

सम्पर्क–मो० 08901387993

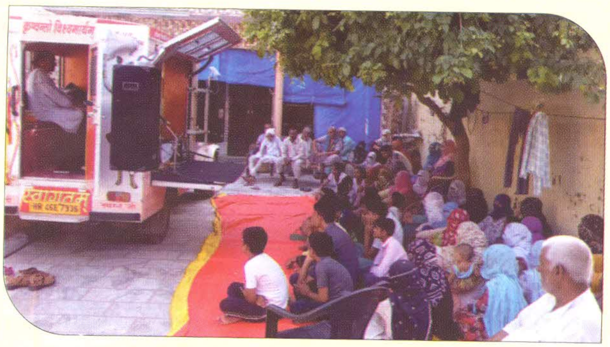

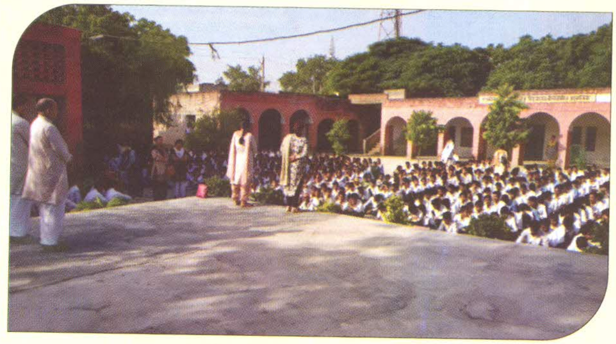

वेद प्रचार अभियान की झलकियां।

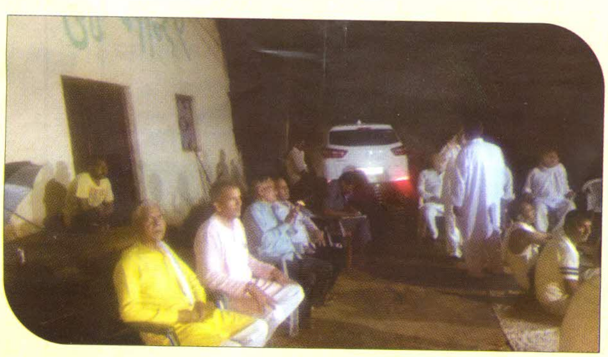

ओ३म्

यज्ञ-योग और स्वाध्याय जीवन में अपनाएं - आर्यसमाज के साथ कदम से कदम बढ़ाएं

वैदिक विचारधारा को विश्वभर में गुंजायमान करने के संकल्प को साथ लेकर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

भारत की राजधानी दिल्ली में विश्वभर के आर्यों का महाकुंभ

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
25 से 28 अक्टूबर 2018
दिल्ली
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी

दिल्ली (भारत)

25 से 28 अक्टूबर 2018

तदनुसार कार्तिक कृष्ण १, २, ३, ४ विक्रमी संवत् २०७५

-: सम्मेलन स्थल :-

स्वर्ण जयंती पार्क, रोहिणी, सैक्टर-10, दिल्ली-85

यज्ञ, योग, वैदिक सत्संग और प्रवचनों से लाभ उठाने हेतु

भारी सख्या मे परिवार सहित सम्मिलित होकर कार्यक्रम को सफल बनाएं।

सम्मेलन कार्यालय : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 91-9540029044

E-mail : aryasabha@yahoo.com, Website : www.aryamahasammelan.org, www.thearyasamaj.org

YouTube thearyasamaj 9540045898

Postal Regn. - RTK/010/2017-19
RNI - HRHIN/2003/10425

श्री ....

पता ....

....

प्रेषक :
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक
हरियाणा, 124001

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक उमेद शर्मा ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

- सम्पादक उमेद शर्मा